bseb 9th hindi notes chapter 10 निम्मों की मौत पर

निम्मों की मौत पर

विजय कुमार

कवि – परिचय

विजय कुमार समकालीन कवि हैं । फिलहाल वे मुंबई में रहते हैं और उन्होंने झुग्गी – झोपड़ियाँ में रहनेवालों के लिए अनेक कल्याणकारी कार्य किये हैं । उनकी प्रसिद्ध पुस्तक ' रात – पाली ' है । उनकी कविताएँ जीवन और अनुभव के अप्रत्याशित विस्तारों में जाने की एक उत्कट कोशिश है । पिछले दशकों से अपने काव्य वैविध्य , भाषिक प्रयोगशीलता के कारण विजय कुमार की कविताएँ हमेशा अपने समय में उपस्थिति दर्ज कराती रही है और उसमें समकालीनता का इतिहास दर्ज होता दिखता है । समय और समकाल , भौतिक , अधिभौतिक प्रकृति और बाजार , शोषक और शोषित , पृथ्वी और उसमें अदृश्य कीड़े तक का अस्तित्व उनकी कविता में परस्पर आते – जाते , हस्तक्षेप करते , खलबली मचाते , उलट – पुलट करते एक ऐसे विस्मयकारी लोक की रचना करते हैं , जिसे देखकर पहला आश्चर्य तो यही होता है कि यहाँ कितने स्तरों पर कैसा जीवन संभव है , उसमें कितने ही आयाम हैं ।

कविता का भावार्थ

' निम्मो की मौत पर ' शीर्षक कविता समकालीन हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर विजय कुमार द्वारा रचित है । विजय कुमार उत्कट संवेदनशील और अंतर्मुखी प्रतिभा के धनी कवि हैं । इनकी कविताएँ अपने समय की उदासी , निराशा , पीड़ा से जुझती मानव मन की कविताएँ हैं । पठित कविता गहरी मानवीय करुणा उपजी कविता है । कवि ने महानगरों में काम करने वाली घरेलू नौकरानी की दुःख भरी मौत का चित्रणं इस कविता में किया है । कवि नौकरानी की तुलना भीगी हुई फुदकती चिड़ियाँ से करता है । नौकरानी गरीबी के कारण अंधेरे कोने में चोरों की तरह छिप कर एक सूखी रोटी तीन दिन पहले बने साग से खाती थी । कई वर्षों से उसने अपनी माँ को चिट्ठी नहीं लिखी थी । टेलीफोन के पास जाने की उसे मनाही थी ।

कवि को उसकी प्रताड़ना गाली , पिटाई , ठठे फर्श पर रात में सोना याद है । वह कहता है कि जब वह नींद में सोती थी तो मानो धरती काँप जाती थी । रोते समय वह हिचकियाँ लेती थी , उसके दुःख से उसके मायके के लोग जानते थे ।

उसे इतना कष्ट था कि हर रोज एक घाव उसके देह में कही लगता होगा जो दिखाई नहीं देता था । वह अपना दुःख किसी से नहीं कहती थी । वह प्रार्थना भी नौंद में ही करतो होगी ।

वह मात्र तीस वर्ष में इस संसार से विदा हो गई । यह उन उसे संसार से जाने को नहीं थी । उसे कम से कम अभी तीस वर्ष और जीवित रहना था । परंतु वह एक दिन रेत की दीवार को तरह भरभरा कट कर गिर गई । वह गरीबी के कारण मरी । उसके मरने में कोई रहस्य नहीं था ।

एक नौकारानी को मृत्यु पर कति ने पुरी संवेदनशीलता से चित्रित किया है । यह उसके गहरी मानवीयता का परिचय देता है ।

https://www.evidyarthi.in/